प्रकाशनार्थ।

कथा तीसरा दिन।

28 सितम्बर, गोरखपुर।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 54 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 9वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत कथा के तीसरे दिन व्यास पीठ से कथा व्यास वृंदावन मथुरा से पधारे भागवत भास्कर श्री कृष्णचंद्र शास्त्री "ठाकुर जी" ने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा हमें धर्म के साथ जीवन जीना सिखाती है। हम कितना जीते हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है अपितु हम कैसे जीते हैं यह महत्वपूर्ण होता है। जीवन का आधा समय सोने में बीत जाता है, आधा बचपन और गृहस्ती में बीत जाता है तो भजन कब करोगे ?

इसलिए अपना काम करते रहो और मन को गोविंद में लगाए रहो, भजन होता रहेगा। भगवान् को तो चींटी के पैर के चलने की भी आवाज सुनाई देती है। वह अणु से भी छोटा है और महान् से ही बड़ा है। वे आपके मन की आवाज सुनने में देर नहीं करते ।श्रीमद्भगवद् गीता में भगवान ने कहा है कि मन को नियंत्रण में करो, मन ही संसार के बंधन और मोक्ष का कारण है।

व्यास ने कहा कि हम सभी को अपनी दिनचर्या में ब्रह्ममुहूर्त में जागरण, भ्रमण, योगासन, प्राणायाम इत्यादि को नियमित करना चाहिए, इससे शरीर निरोगी तथा मन स्वस्थ व एकाग्र होता है। हमें विषम परिस्थितियों में भी मुस्कुराते रहना चाहिए क्रोध पर विजय पाने वाला ही भगवान की भक्ति का सत्पात्र बनता है।

शुकदेव जी काम और क्रोध पर विजय पा लिए थे ,तभी तो सर्वप्रिय बने थे ।

धर्म की परिभाषा अनेक है किंतु सबसे बड़ा धर्म राष्ट्रधर्म है , राष्ट्रधर्म ही सनातन धर्म है और सनातन धर्म ही राष्ट्रधर्म है। सत्संग की महिमा बताते हुए कथा व्यास ने कहा कि व्यक्ति को संग का सर्वदा त्याग करना चाहिए, कदाचित् यदि न छोड़ सके तो संतों का संग करना चाहिए । "संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति" हम जैसा संग करते हैं वैसे ही गुण और दोष हमारे अंदर आते हैं।

गो सेवा का महत्व बताते हुए कहते हैं कि गो सेवा करने से सभी देवता प्रसन्न होते है और जिस भूमि में गो सेवा होती है वो भूमि श्रेष्ठ भूमि बन जाती है। यदि भारत का प्रत्येक परिवार गोपालन करने लगे तो इस देश को विश्व गुरु बनने में देर नहीं लगेगी।

कथा व्यास ने कहा कि इंद्रियों को वश में कर लेने वाला व्यक्ति कुछ भी प्राप्त कर सकता है उसके लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं होता। हमें चिंता नहीं चिंतन करना चाहिए। लेकिन समस्या तब होती है जब हम चिंता छोड़ते नहीं और चिंतन हम करते नहीं। हमें चिंतन करना चाहिए कि मैं कौन हूं ,मैं कहां से आया हूं , ऐसा चिंतन करने से हमारे अंदर से आवाज आएगी "चल रे हंसा अमर लोक को यहां कोई नहीं तेरा है"।

हमारे अंदर जो भी मैं और मेरा का भाव है वो हमारा मिथ्या अभिमान है, हमारे जीवन में जो कुछ भी है वह भगवान का दिया हुआ है , जिसको हम अपना समझते हैं वह हमेशा हमारे पास नहीं रह सकता, जो कुछ भी है वह कुछ दिनों का साथी है। भजन ही हमारे साथ रहता है और हमारे साथ परलोक तक जाता है।

कथा व्यास ने " मैं नहीं मेरा नहीं यह तन किसी का है दिया।" भजन गाकर भक्तों को मंत्र मुग्ध कर दिया।

कथाव्यास ने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा में भगवान की कथा नहीं है अपितु भक्तों की कथा है। यदि भगवान् की कथा होती तो इसे भगवत् कथा कहते। भागवत अर्थात् जो भगवान के हैं। भगवान के भक्त होते हैं इसीलिए उनकी कथा को भागवत कथा कहते हैं।

भगवान अपने भक्तों के अधीन होते हैं जहां भक्तों की कथा हो ,जहां भक्तों का मन रहता हो, भगवान भी वही निवास करते हैं। भगवान किसी ज्ञानी के ज्ञान से नहीं प्राप्त होते। यदि ऐसा होता तो गजराज कोई ज्ञानी नहीं था किंतु गोविंद नाम लेते ही भगवान उसकी रक्षा करते हैं। भगवान बड़े कुल के कुलीन के द्वारा नहीं पाए जाते यदि ऐसा होता तो दासी पुत्र विदुर के घर जाकर साग नहीं खाते। भगवान् केवल भाव के भूखे होते हैं जहां भाव होगा वही भगवान होंगे। भगवान विदुर के घर जाते हैं तो उनकी पत्नी पत्तल पर छिलका देती गई और भगवान उनके भाव को देखकर छिलका खाते रहे। विदुर जी के कहने पर भगवान कहते हैं कि मैंने यह नहीं देखा कि

यह क्या है मैं तो बस काकी का प्रेम देख रहा था। भगवान को केवल प्रेम ही प्यारा है। प्रेम करने वाला व्यक्ति ही भगवान का सच्चा भक्त होता है।

कथा समापन आरती एवं प्रसाद वितरण से हुआ। संचालन डॉ अरविंद कुमार चतुर्वेदी ने किया।